हरिभूमि

भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

11 यक्षोपति जनेऊ ब्रहम, धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का प्रतीक आचार्य कौशिक

12 घग्घर ड्रेन टूटने से हालात बेकाबू बस्तियों में घुसा पानी, पलायन को मजबूर

डॉ. गुंजन भारद्वाज
Sr. Consultant – Critical Care Medicine & Anesthesia
क्रिटिकल केयर मेडिसिन एवं एनेस्थीसिया विशेषज्ञ
MBBS, DA , DNB ,FNB (CRITICAL CARE MEDICINE)
14+ वर्षों का अनुभव

क्रीटिकल केयर मेडिसिन और एनेस्थीसिया समस्याओं का भरोसेमंद इलाज
डॉ. गुंजन भारद्वाज के साथ
गंभीर रोगियों का ICU में मॉनिटरिंग और इलाज | पुरानी साँस की बीमारी (दमा व COPD) | संक्रमण (Sepsis & Septic Shock) बिगड़ा हुआ निमोनिया | दिल का सदमा | लंबे समय से बुखार, एलर्जी | टाइफाइड, डेंगू, मलेरिया | पैरों में सूजन आना | खून की कमी ऑपरेशन के दौरान व बाद में दर्द रहित इलाज | बेहोशी की सुरक्षित प्रक्रिया (General, Spinal, Epidural आदि) | बच्चों और वयस्कों – दोनों के लिए विशेषज्ञ एनेस्थीसिया | दिल, दिमाग और थोरैसिक सर्जरी के लिए विशेष एनेस्थीसिया देखभाल | लंबी खाँसी | आंतों का संक्रमण | प्यूरल टैप | ICD डालना | साँस की मशीन का सपोर्ट | प्यूरल इफ्यूजन
यदि आप भी इन समस्याओं से परेशान हैं, तो आज ही हमारे विशेषज्ञ से परामर्श करें
आयुष्मान पैनेल पर ICU में सभी प्रकार का इलाज उपलब्ध*
जनसेवा में तत्पर MK हॉस्पिटल, भिवानी

एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क
70 09 09 092
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road
Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

रक्षाबंधन पर जबरदस्त उमड़ी बहनों की भीड़

कम पड़ी रोडवेज की फ्री लॉरी, वसूलीकर निजी बसों ने मंजिल तक पहुंचाई सवारी

सामान्य सवारियों के साथ बहनों ने भी बसों के पीछे लगाई दौड़, बसों की कमी के चलते निजी वाहन चालकों ने भी जमकर कूटी चांदी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शनिवार को रक्षा बंधन पर्व पर बसों में जबरदस्त भीड़ भड़ाका रहा। भाईयों की कलाइयों पर राखी बांधने जा रही महिलाओं को रोडवेज में तो फ्री में सफर हुआ,लेकिन निजी बस चालकों ने सभी सवारियों से किराया वसूला। हालांकि कुछ निजी बस चालकों ने अपनी मर्जी से किसी एक दो महिलाओं का किराया छोड़ा होगा,लेकिन अधिकांश महिलाओं से किराया वसूला गया। रोडवेज बसों के अभाव में बस अड्डों पर जबरदस्त भीड़ भड़ाका देखा गया। बसों के आगे पीछे भागते रही सवारियां। दूसरी तरफ रोडवेज बसों के अभाव में निजी वाहन चालकों ने जमकर चांदी काटी। निजी वाहन चालकों ने मनमर्जी का किराया वसूला। पूरे दिन इसी तरह की स्थिति बनी रही। शाम के समय थोड़ी बहुत भीड़ कम हुई।

शनिवार अल सुबह से ही बस अड्डों पर महिलाओं व उनके साथ जाने वाले लोगों की भीड़ पहुंचनी शुरू हो गई। बस अड्डे पर पहुंच कर बसों का इंतजार करने लगे।

हर जगह दिखाई दी भीड़

हालांकि पहले जिस समय रोडवेज की बसें गंत्व्य के लिए रवाना होती थी,आज भी उसी समय पर रवाना हुई, लेकिन अन्य दिनों की अपेक्षा आज भीड़ भड़ाका ज्यादा रहा। क्योंकि हर कोई महिला रक्षा बंधन पर पर्व पर अपने भाई के घर पहुंचना चाह रही थी। जिस वजह से बस अड्डे , बस क्यू शेल्टर व अन्य बसों के स्टॉप प्वाइंटों पर भीड़ रही। जैसे ही किसी बूथ पर कोई रोडवेज बस लगती तो कुछ ही क्षणों में बस की सारी सीटें फुल हुई। यह नजारा सभी बूथों का रहा। कभी भीड़ किसी तरफ हिचकौले खाती तो कभी किसी दिशा में । दूसरी तरफ बसों के अभाव में निजी वाहन चालकों ने भी जमकर चांदी काटी। निजी वाहन चालकों ने सवारियों से मनमाफिक किराया वसूल किया। जिससे महिलाओं को काफी परेशानी उठानी पड़ी। गंत्तव्य तक पहुंचाने के लिए निजी वाहन चालकों ने सवारियों से मनमाफिक किराया वसूल किया। किसी यात्री से डेढ तो किसी से दोगुना किराया वसूल किया। हालांकि ज्यादातार महिलाएं रोडवेज बसों के इंतजार में ही खड़ी रही, रोडवेज के आने के बाद ही वे अपने घर या गंतव्य तक पहुंची, लेकिन रोडवेज बस न मिलने की वजह अनेक महिलाओं व पुरुषों को निजी बसों में सफर करना पड़ा।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA ACCREDITED BY NATIONAL BOARD OF ACCREDITATION
B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED # 19 in North India
RANKED # 39 Pvt. Institutes in India
RANKED # 41 Across India
RANKED # 62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
ADMISSIONS OPEN 2025-26
B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DS), CSE (AI & ML), FIRE TECH. & SAFETY, ELECTRICAL MECHANICAL, ELECTRONICS & COMMUNICATION ENGG., CIVIL
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA | B.ARCH | M.ARCH | B.ED | M.ED
COURSES FOR WORKING PROFESSIONALS IN FLEXIBLE TIMINGS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY) | B.TECH (CSE) | M.TECH (CSE)| MBA
For Admission Enquiry 8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP) 9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE) 8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi | +91-9654292902, 03, 04

OSGU
OM STERLING GLOBAL UNIVERSITY
(APPROVED BY UGC, MINISTRY OF EDUCATION, GOVT. OF INDIA)
EXCELLENCE IN EDUCATION 17 Years

HOSTEL FACILITY AVAILABLE FOR GIRLS & BOYS
LIMITED SEATS
Pharm.D | B.Pharma | D.Pharma | M.Pharma
(Pharmaceutical Chemistry, Industrial Pharmacy, Pharmaceutical Quality Assurance, Regulatory Affairs, Pharmaceutical Analysis Pharmaceutics)
B.Tech. Fire Safety
CSE-AI, Cyber Security
Electrical, Mech., Civil, ECE, P&P
B.Sc./M.Sc. Paramedical
MLT, OPTOMETRY, OT & AT, Radiology & Imaging Tech.
B.Sc (Hons.) M.Sc. Agriculture
B.Sc./M.Sc.Forensic Sci.
B.Sc./ M.Sc. Yoga & Naturopathy
B.Plan/M.Plan
MPT
BA LLB/LLB/LLM
B.Sc./ M.Sc. Hotel Mgmt.
RCI COLLEGE CODE HR 056
Special Education
B.Ed. (HI / VI / ID / LD / MD)
B.Sc. Hons Clinical Psychology
B.A. B.Ed. Special Education (ID-Middle Stage)
B.Ed. M.Ed. Special Education (ID, SLD)
Transport Facility from Hisar, Hansi, Fatehabad, Bhiwani, Jind, Tohana, Narwana and near by areas.
Campus : NH-52, Hisar-Chandigarh Road, Hisar-125001, Haryana
8607899999, 8255099999
Discover more at www.osgu.ac.in
info@osgu.ac.in /OSGUHISAR

CHINAR FABRICS Chinar Mill Showroom
चिनार
मिल शोरूम
STOCK CLEARANCE SALE
3 शर्ट 1299/-
2 पैन्ट 1299/-
2 जीन्स 1799/-
1 ब्लेजर 1499/-
2 जैकेट 1599/-
यह ऑफर 15 अगस्त तक रहेगा।
नजदीक बासिया भवन, हांसी रोड, भिवानी
M.: 70567-95900

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण :** अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश :** नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, रअगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना
- अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे
- अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्चे : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्चे : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंग। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट,भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कमी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

भिवानी। श्रद्धालुओं को प्रवचन देते सतगुरू बाबूजी साहेब। फोटो : हरिभूमि

सत्संग जीव के जीवन का सफल साधनः साहेब

भिवानी। आनंद परमानन्द सत्संग आश्रम निगाणा धाम में पूर्णिमा का सत्संग रक्षाबंधन के पावन पर हुआ, जिसमें हरियाणा, पंजाब, राजस्थान की संगत आई। सतगुरु बाबूजी साहेब ने पूर्णिमा के सत्संग का महत्व बताते हुए कहा कि आदि गुरु कबीर साहेब, सन्त शिरोमणी रविदास, गुरु नानकदेव व अन्य सन्तों की महिमा बताई। उन्होंने जीवों को सन्तमत की धारा से जोड़कर उनका जीवन सफल करना बताया और समझाया कि सत्संग में आके पापी भी पार उतर जाते है। सत्संग जीव के जीवन का सफल साधन है।

सड़क दुर्घटना में महिला की दर्दनाक मौत

तोशाम। शनिवार को तोशाम-भिवानी मार्ग पर पेट्रोल पंप के नजदीक पिकअप चालक महिला को टक्कर मारकर मौके से फरार हो गया। इस दुर्घटना में महिला की दर्दनाक मौत हो गई। गांव रिवासा निवासी कृष्ण ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि गांव चैनत निवासी उसकी चाची बाला पहले उसके पास गांव रिवासा में रहती थी तथा वर्तमान में वह पिछले करीबन 2 महीने से अपने घर प्रेम नगर हांसी में रह रही थी। शनिवार सुबह वह रिवासा आने के लिए तोशाम-भिवानी मार्ग पर गोयल पेट्रोल पंप के नजदीक वाहन का इंतजार कर रही थी। इसी दौरान तोशाम की तरफ से पिकअप चालक गाड़ी को तेज रफ्तार में लापरवाही से चलता हुआ आया तथा उसकी चाची बाला देवी को सीधी टक्कर मार दी और आरोपी गाड़ी चालक घटना के पश्चात मौके से फरार हो गया।

बूंदाबांदी ने तोड़ा पारे का गुरुर, पांच डिग्री लुढ़का

भिवानी। बीते सप्ताह तक पश्चिम (पिछवा) हवा चलने की वजह से पारे को पंख लगने शुरू हो गए थे। पारा 35 डिग्री के आसपास पहुंच गया था। उमस व गर्मी से लोग बेहाल नजर आने लगे। शनिवार सुबह से हो रही हलकी बूंदाबांदी ने पारे के गुरुर तोड़ दिया। हल्की बूंदाबांदी से पारा एक दम लुढ़कर पांच डिग्री सेल्सियस नीचे आ गया।

बहनों ने पेड़-पौधों को भाई मानकर बांधी राखी, पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

प्रधानमंत्री के आह्वान पर एक पेड़ मां के नाम, एक पेड़ भाई-बहन के नाम अभियान शुरू

■ जिन बहनों के भाई नहीं, वे पेड़ पौधों और सैनिकों को माने भाई : भारद्वाज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। पौधे को राखी बांधतीं नव्या व आरोही और भाई दक्ष अत्री को राखी बांधती बहन तनिष्का। फोटो : हरिभूमि

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के आह्वान एक बेटी एक मिशन व एक पेड़ मां के नाम के तहत रक्षाबंधन पर्व पर नव्या भारद्वाज व आरोही भारद्वाज ने पौधों को अपने हाथों से बनाई तिरंगा राखी बांधकर पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ पर्यावरण और पौधों के संरक्षण का संदेश दिया। वहीं उन सैनिकों के नाम भी तिरंगा राखी भेजी, जो बॉर्डर पर हमारी शरहद की रक्षा कर रहे हैं।

वहीं लड्डू गोपाल को भी दोनों बहनों ने राखी बांधी। नव्या व आरोही के भाई नहीं हैं और उन्होंने पेड़ को ही भाई मानकर उसे राखी बांधी और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। नौ वर्षीय आरोही वर 13 वर्षीय नव्या ने अपनी मां अंजु व पिता अशोक भारद्वाज के साथ पौधरोपण का आगाज किया है। एक पेड़ मां के नाम लगेगा तो अब साथ में भाई व बहन के स्नेह का प्रतीक पेड़ भी लगेगा। राष्ट्रपति अवार्डी अशोक कुमार भारद्वाज ने कहा कि उनकी दो बेटिया हैं, जो रक्षाबंधन पर्व पर पेड़ पौधों और सैनिकों को राखी बांधकर रक्षाबंधन मनाती हैं। आरोही और नव्या भारद्वाज ने रक्षाबंधन पर्व पर पेड़ पौधों को पेड़ पौधों की फूल पत्तियों से तैयार की तिरंगा राखी बांधी है।

उन्होंने रक्षाबंधन पर्व पर पेड़ पौधों को राखी बांधकर संदेश दिया कि हमें पेड़ पौधों की सुरक्षा करनी चाहिए और अच्छा पर्यावरण बनाना चाहिए, क्योंकि अच्छा पर्यावरण होगा तो हमारा जीवन भी अच्छा होगा। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के एक पेड़ मां के नाम अभियान को अपनाते हुए 25 पौधे लगाने का संकल्प लिया है।

भाई ने बहन को दिया उपहार में पौधा

बवानीखेड़ा। रक्षाबंधन पर पौधा उपहार में देते मनीष शंकर। फोटो : हरिभूमि

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा में सामाजिक मंच के संस्थापक मनीष शंकर ने अपनी बहन को रक्षा बंधन के अवसर पर पौधा उपहार में दिया और जीवन भर उसकी रक्षा करने का भी प्रण लिया। उन्होंने बताया कि कि बीके विद्यालय में कार्यरत स्टाफ सदस्या उनकी बहन भी पूरे विद्यालय संग मिलकर पर्यावरण को लेकर अलख जताए रहती है और वे भी पर्यावरण के प्रति अटूट प्रेम रखते हैं। इसी के चलते उन्होंने अपनी बहन को पौधा उपहार दिया।

अटूट रिश्ते का प्रतीक है रक्षाबंधन पर्व

बहल। गांव हरियावास के आंगनवाड़ी केंद्र में रक्षाबंधन का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विभाग की कार्यकर्ताओं ने महिलाओं और बच्चों को राखियां बांधी और पर्व को उत्सव के रूप में मनाया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उर्मिला हरियावास ने बताया कि यह त्योहार भाई बहन के प्यार और अटूट रिश्ते का प्रतीक है। रक्षा बंधन का अर्थ है सुरक्षा का बंधन। यह त्योहार हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्यौहार है। इस दिन बहने अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है और उन्हें मिठाई खिलाती हैं। वहीं ,भाई इस अवसर पर अपनी बहन की रक्षा करने का वचन देते हैं। राखी सिर्फ एक धागा नहीं बल्कि स्नेह, विश्वास और साझा किए गए वादों का प्रतीक है। उर्मिला हरियावास ने बताया कि हमें सभी त्योहारों को मिलजुल कर मनाना चाहिए ताकि हमारी संस्कृति जीवित रह सकें।

राजयोगिनी सुमित्रा बहन ने बांधी राखी

भिवानी। ब्रह्मकुमारीज के मीडिया कॉर्डिनेटर बीके धर्मवीर को राखी बांधती शाखा प्रमुख राजयोगिनी बीके सुमित्रा बहन।

भिवानी। रक्षाबंधन पर्व पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारीज की शाखा सिद्धिधाम में आध्यात्म विचार संगोष्ठी का आयोजन किया। विचार संगोष्ठी के दौरान शाखा प्रमुख राजयोगिनी बीके सुमित्रा बहन ने उपस्थित भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से भाई की रक्षा के लिए बहन राखी बांधती है, ठीक उसी प्रकार परमात्मा हम सभी आत्माओं को पवित्रता के बंधन में बांधता और उसकी रक्षा भी स्वयं परमात्मा करता है, इसलिए इसे आत्मा का परमात्मा से बंधन भी कह सकते हैं। इस अवसर पर बीके आरती, बीके पुनम, बीके कविता, बीके राज बहन, बीके राजेश, बीके सुनील, बीके महेश, बीके मनोज, अजय वैद्य, मीडिया कॉर्डिनेटर बीके धर्मवीर आदि उपस्थित रहे।

पौधों को रक्षासूत्र बांधकर लिया रक्षा का संकल्प

■ पेड़ बनने तक देखभाल करने का संकल्प लिया

भिवानी। बिगड़े पर्यावरण प्रदूषण को सुधारने के लिए ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधें लगाने और उनकी सुरक्षा करने की आवश्यकता हैं। वहीं पहले से लगाए गए पौधों की रक्षा व पेड़ बनने तक देखभाल करने का संकल्प लिया, ये बात यूनियन बैंक की मैनेजर ममता वर्मा ने शनिवार को रक्षाबंधन पर्व पर अपने मामा के घर रक्षाबंधन पर्व पर पौधरोपण करते हुए कही। उन्होंने जनस्वास्थ्य विभाग कैंपस में लगे पौधों को सपरिवार राखी बांधकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। ममता जनस्वास्थ्य विभाग में कनिष्ठ अभियंता एवं पर्यावरण रक्षक के जेई बिजेश कुमार जावला की मांजी है। ममता ने बताया कि उनके पिता बीएसएफ में तैनात है, उन तीनों भाई बहनों की परवरिश मामा के पास हुई। इस वजह से उनका पालन पोषण मामा के सानिध्य में ही हुआ। उन्हीं की प्रेरणा से हम अपने सभी पारिवारिक सदस्यों के जन्मदिन, शादी सालगिरह आदि सुअवसरों पर पौधे लगाकर उनकी रक्षा का संकल्प लेते हैं। इस अवसर पर सुमन रानी, विनीत, संदीप जालवाल, प्रियंका, करुणा, कृष जावला, विनिका, विशु व आदित्य आदि ने पर्यावरण रक्षा का संकल्प लिया।

आस्था स्पेशल स्कूल में मनाया रक्षाबंधन पर्व

भिवानी। आस्था स्पेशल स्कूल के संचालक विजय शर्मा को राखी बांधती दिव्यांग छात्राएं।

भिवानी। आस्था स्पेशल स्कूल में दिव्यांग छात्राओं ने अपने साथ पढ़ने वाले भाइयों के राखी बांधकर रक्षाबंधन पर्व मनाया और उसके महत्व को और अधिक बढ़ा दिया। संस्था में बच्चों के बीच रक्षासूत्र के महत्व को विस्तारपूर्वक इस पर्व को उत्साह एवं खुशी के साथ मनाया। दिव्यांग बेटियों ने संस्था के संस्थापक विजय शर्मा की कलाई पर राखी बांधकर आशीर्वाद लिया। इस कड़ी में विजय शर्मा ने बताया दिव्यांग बच्चों का प्यार अद्भुत और भावनाओं से बंधा हुआ हैं और इन बच्चों के बीच बैठता हूं तो मन गदगद हो जाता है। स्कूल की दिव्यांग छात्राओं ने डॉ. तरुण कुलश्रेष्ठ, एडवोकेट पंवार एवं स्टाफ सदस्यों सहित बच्चों का राखी बांधी। संस्था की प्राचार्य एवं संचालिका एडवोकेट सुमन शर्मा ने बताया कि हमारे त्योहार वास्तव में सोहार्द एवं प्रेम के प्रतीक होते हैं, लेकिन रक्षाबंधन का महत्व उनसे अलग है, इस दिन बहनें और बेटियां रक्षासूत्र बांधकर रक्षा करने एवं करवाने का संकल्प लेती है।

सेंट जेवियर्स स्कूल में मनाया रक्षाबंधन पर्व

भिवानी। सेंट जेवियर्स हाई स्कूल में भाई-बहन के प्रेम को दर्शाता रक्षाबंधन पर्व मनाया। कार्यक्रम में मुख्यतिथि स्कूल प्रबंधक मनीष सिंह, निर्देशिका कीर्ति चौहान व प्राचार्या उपस्थित रही। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रों ने स्पेशल असेंबली के माध्यम की। मंच संचालिका छात्रा मन्नत ने असेंबली का आरंभ किया, जिसमें छात्रा गरिमा ने कविता प्रस्तुत की। कविता में भाई-बहन के रिश्ते के विषय में गहराई से बताया। कशिश ने गीत प्रस्तुत किया। छात्रा माथरा, रिया, सोनाक्षी, हिमांशी, रोहित, अंश, ध्रुव व दिवांश छात्रों ने मिलकर नाटक की प्रस्तुति देकर रक्षाबंधन पर्व को भावनाओं से भर दिया। सेंट जेवियर्स की छात्राओं ने पुलिसकर्मियों को राखी बांधी। औद्योगिक थाना में निरीक्षक सज्जन सिंह, संजय, जय आदि को श्रीसनातन परंपरा के अनुसार टीका लगाकर रक्षासूत्र बांधा।

राखी में हिमांशी व मेहंदी में नेहा प्रथम

भिवानी। रक्षाबन्धन पर्व पर बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए आर्य स्कूल में मेहन्दी व राखी प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें बहुत से प्रतिभाशाली बच्चों ने नवीन कलाकृति से मेहन्दी रचाई व बहुत ही आकर्षक राखियां बनाई। स्कूल में समय-समय पर बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए ऐसे आयोजन किए जाते हैं। प्रतियोगिता का आयोजन समस्त स्टाफ के सहयोग से शिक्षिका शालू की देखरेख में हुआ। विद्यालय निदेशक सुखविन्द्र सिहाग ने बच्चों को राखी के महत्व के बारे में बताया। स्कूल प्राचार्य कुलदीप सिंह श्योराण ने कहा कि समय-समय पर करवाए जा रहे क्रियाकलापों से विद्यार्थियों में कौशल विकास होता है। राखी प्रतियोगिता में हिमांशी ने प्रथम, दीना, प्रिया व प्रीति ने द्वितीय व स्नेहा, प्रीति, मेहंदी ने तृतीय स्थान जीता। मेहंदी प्रतियोगिता में नेहा ने प्रथम, रीतिका ने द्वीतीय तथा अंशिका ने तृतीय स्थान हासिल किया।

रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र, अटूट स्नेह व प्यार का महापर्वः बीके ज्योति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

रक्षाबंधन भाई-बहन के परम पवित्र, अटूट स्नेह व प्यार का महापर्व है, ये उद्गार झोझूकलां खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी आदित्य श्योराण ने ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा रक्षा सूत्र बंधवाते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि दुनिया में भाई-बहन का रिश्ता सबसे पवित्र और अनोखा होता है, इस रिश्ते को मजबूती देने में आध्यात्मिक मूल्यों का होना जरूरी है। झोझू सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन ने कहा कि पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है, ये रक्षाबंधन का पावन पर्व हमें संदेश देता है। उन्होंने कहा कि हम सभी का परमरक्षक परमपिता परमात्मा शिव है उनकी याद से नकारात्मक विचारों को समाप्त कर अपने विचार सकारात्मक दिव्य बनाने होंगे तभी समाज श्रेष्ठ बनेगा। सांगवान खाप तेरह के अध्यक्ष सूरजभान ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों की निःस्वार्थ सेवा व अध्यात्म से समाज एकता के सूत्र में अवश्य बंधेगा। द्रोणाचार्य अवार्डी महावीर फोगाट ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन खेलों में भी मनोबल बढ़ाता है अध्यात्म हमें मर्यादित रहना सीखता है। झोझूकलां व्यापार मंडल अध्यक्ष नरेश ठेकेदार ने कहा कि मानवीय मूल्यों में बंधकर ही समाज को सद्भावना युक्त समृद्ध समाज बना सकते हैं।

नन्हे मुन्ने विद्यार्थियों ने राखी बांधी तथा एक दूसरे को उपहार भेंट किए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के बी के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विद्यालय में 'राखी बनाओ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा तीसरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों ने कनिष्ठ विभाग संचालिका मंजू मलिक के मार्गदर्शन में आकर्षक राखियां बनाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने राखी बनाने में पर्यावरण सहयोगी कारकों का उपयोग किया। नन्हे मुन्ने विद्यार्थियों ने एक दूसरे की कलाई पर राखी बांधी तथा एक दूसरे को उपहार भेंट किए। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि रक्षाबंधन का पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करती हैं तथा उनसे अपनी रक्षा का वचन लेती हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार सर्वप्रथम द्रोपदी ने श्री कृष्ण को राखी बांधकर उनसे अपनी रक्षा का वचन लिया था। आजकल इस पावन पर्व की महता मलिन सी होती जा रही है। हमें लालच का खंजर फेंक कर इस पावन पर्व की महता को सिद्ध करना ही होगा। कक्षा प्रथम में आर्यन प्रथम, निधि द्वितीय तथा रेयांश तृतीय स्थान पर रहें। कक्षा दूसरी में यशस्वी प्रथम, दिशा द्वितीय तथा यश तृतीय स्थान पर रहें। कक्षा छठी से आठवीं में विधि चौहान प्रथम, इशू और भैरवी द्वितीय, राघव तथा पूर्वी की राखी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

रामतलाई तालाब में श्रावणी उपाक्रम कार्यक्रम का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहल

बहल क्षेत्र के गांव बिठन में रामतलाई तालाब में श्रावणी उपाक्रम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्वान पंडितो द्वारा आयोजन में श्रावणी उपाक्रम, स्नान संध्या, उपासना के बाद देव तृपण ,ऋषि तर्पण ,पितृ तर्पण , पूजन यज्ञोपवीत पूजन पूर्ण करवाया गया।

शनिवार को हर वर्ष की तरह विश्व शांति, पर्यावरण शुद्धि, आपसी भाईचारा बढ़ाने के लिए श्रावणी उपक्रम विधि विधान से मनाया गया। आयोजक रामशरण बिठन ने बताया कि इसकी स्थापना तत्कालीन प्राचार्य सत्यनारायण साबू संस्कृत महाविद्यालय के आचार्य पंडित हनुमान प्रसाद शास्त्री की प्रेरणा से प्रारंभ किया था। तब से आज तक निरंतर उनके सभी शिष्य इसमे भाग ले रहे हैं। दिवंगत हनुमान प्रसाद शास्त्री के प्रति श्रद्धांजलि देते हुए श्रद्धा अनुसार गायत्री मंत्र जाप किया गया। इसमें आचार्य प्रवीण शास्त्री खोरड़ा ने बताया कि इस आयोजन से कर्मकांड करने वाले विद्वानों को शक्ति संचित होती है तथा धर्म के प्रतिआस्था निष्ठा श्रद्धा बढ़ती है। इसके आयोजन में लोहारू, बहल, सिवानी व महेंद्रगढ़ तक के विद्वान भाग लेते हैं। इस अवसर पर आचार्य पंडित प्रवीण शास्त्री खोरड़ा, दीपक शास्त्री खोरड़ा, इस आयोजन के अध्यक्ष रामशरण विठण, एडवोकेट राजीव दीक्षित,अश्विनी कुमार शर्मा,लक्ष्य , पंडित कुंदन लाल शास्त्री सुरपुरा,मुकेश मिश्रा तारानगर, डॉ. मनोज शास्त्री बलाली, , सुशील शर्मा लोहारू, मास्टर शिवकुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री के विकसित भारत संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने के लिए तन्मयता से कार्य करें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ चौधरी बंसीलाल विवि के डीन, विभागाध्यक्षों,परीक्षा नियंत्रक एंव कुलसचिव की बैठक को शिक्षा मंत्री ने किया संबोधित

भिवानी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने के लिए हमारे विश्वविद्यालय अध्यापक नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत दर्शाई गई नीतियों को अपनाकर पूर्ण तन्मयता से कार्य करें। यह आवाहन शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के डीन,विभागाध्यक्षों,परीक्षा नियंत्रक एंव कुलसचिव को संबोधित करते हुए किया। शिक्षा मंत्री विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों से नई शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों को लेकर परिचर्चा कर रहे थे। इस दौरान प्राध्यापकों से उन्होंने नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए अपनाए जा रहे कदमों पर विचार जानें और उनके सुझाव आमंत्रित किए। उन्होंने कहा कि देश का युवा वर्तमान में कृषि से विमुख हो रहा है उसे कृषि अनुसंधान द्वारा कृषि क्षेत्र में आए नए बदलावों से अवगत करवा खेती से लाभान्वित होने के लिए प्रोत्साहित करने का आग्रह किया और अनेक उदाहरणों द्वारा डेयरी,प्राकृतिक खेती से जूड शिक्षक्त युवाओं द्वारा नये कृषि उद्योग स्थापित कर लाभान्वित होने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अब युवाओं को देश के उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल विकास करने की शिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। यह काम विश्वविद्यालय के शिक्षक कर सकते हैं उन्होंने चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय में पिछले वर्षों में किए गए अनुसंधान की प्रशंसा की और नई शिक्षा नीति के आलोक में इस वर्ष विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा नए कोर्सेज को प्रारंभ करने पर खुशी जाहिर की और उद्योग से जुड़कर काम करने के विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा की गई पहल की प्रंशसा की। लगभग 3 घंटे तक चली इस बैठक में मुख्यमंत्री के ओएसडी राज नेहरू ने भी महत्वपूर्ण सुझाव दिए उन्होंने कौशल विकास तथा मल्टीडिसीप्लिनरी कोर्सेज के संदर्भ में गहन विचार रखते हुए विश्वविद्यालय को आह्वान किया कि कौशल कार्यक्रमों को राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क के अनुसार बनाएं जिससे ज्ञान कौशल और योग्यता के स्तरों को सही रूप से विद्यार्थियों में कौशल विकास किया जा सके। उन्होंने शोध कार्यों में सामाजिक सरोकारों को जोड़ने का भी महत्वपूर्ण सुझाव दिया उन्होंने कहा की पेटेंट्स को कर्मशलाइज करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। जिससे शोध का सीधा लाभ समाज तक पहुंचाया जाए। विवि की कुलपति प्रोफेसर दीप्ति धर्माणी और कुलसचिव भावना शर्मा ने इस अवसर पर शिक्षा मंत्री महीपाल ढाँडा, एमएलए घनश्याम शर्राफ़, एमएलए कपूर सिंह वाल्मीकि तथा मुख्यमंत्री के विशेष कार्य अधिकारी प्रो. राज नेहरू एवं श्री वीरेंद्र कौशिक का स्वागत करने के पश्चात कहा की चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय सरकार की नीतियों के तहत पूरी कर्तव्य निष्ठा से कार्य करने के लिए वचनबद्ध है।

यक्षोपति जनेऊ ब्रहम, धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का प्रतीकः आचार्य कौशिक

श्रावणी पूर्णिमा को श्रीश्याम सरोवर में किया स्नान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

सावन मास की पूर्णिमा को श्रावणी पूर्णिमा कहा जाता है, जिसका हिन्दू धर्म में विशेष महत्व है। सावन मास भगवान शिव का मास होता है। इसके आखरी दिन पूर्णिमा को श्रावणी उपनयन संस्कार होता है, जिसमें 8 साल से बारह साल के बच्चों को यक्षोपति जनेऊ धारण करवाया जाता है।

आर्चाय सुरेश कौशिक ने बताया कि भिवानी छोटी कांशी के रूप में पहचान रखती है, इसलिए भिवानी में पहले काफी पाठशालाएं, आश्रम व संस्कृत पाठशालाए होती थी, जिनमें शिष्य अपने गुरूओं से ज्ञान प्राप्त करते थे। आचार्य कौशिक ने बताया कि श्रावणी के दिन सभी विषय अपने-अपने गुरूओं के साथ आश्रमों में बने सरोवर कुण्ड में स्नान करते फिर ग्रहों की पूजा करते, गणेश पूजन व सप्त ऋषि पूजन, सरोवर के जल में खड़े होकर पंचगव्य का सेवन करवाया जाता। पंचगव्य गाय के गोबर, मूत्र, गाय का दूध, दही आदि से बनाया जाता, जिसके सेवान से शरीर की शुद्धि होती है। यक्षोपवित हिन्दू धर्म में अनिवार्य है। यक्षोपवित में तीन धागे होते हैं, हर एक धागे में नौ तार होते हैं, जिसमें पांच गाठ होती हैं।

25 साल से लगातार हो रहा है कार्यक्रम का आयोजन

उन्होंने बताया कि वे पिछले 25 वर्षों से देवसर मोड स्थित भगवत वाटिका में श्रावणी उप्रथम कार्यक्रम लगातार करते आ रहे हैं, यहां बने श्रीश्याम सरोवर में विधि विधान से स्नान करवाते हैं। इससे पहले संस्कृत पाठशाला, ब्रह्मचार्य आश्रम, संस्कृत सनसन पाठशाला, हालुवासिया वाटिका, महम रोड स्थित बाग में बने सरोवर में किया जाता था, अब पिछले कुछ सालों से जोगीवाला मंदिर स्थित सरोवर में किया जाता है। यक्षोपति के तीन धागों से देवत्रण, पितृत्रण एवं ऋषित्रण, सत्यस्त तम रज गुणों का प्रतिनिधत्व करते हैं, जो पांच गाठे होती हैं। वह ब्रहम, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक हैं। पंचमव्य के सेवन करने से मानसिक एकाग्रता, पाचन क्रिया, स्वच्छता व अध्यात्मिक लाभ होता है।

खबर संक्षेप

यदुवंशी के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

चरखी दादरी। यदुवंशी शिक्षा निकेतन मंदौला के खिलाड़ियों ने ब्लॉक स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय प्राचार्य नरेंद्र यादव और चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने खेल भावना, मेहनत और लगन का परिचय देते हुए कई पदक अपने नाम किए। अंडर 19 शॉटपुट प्रतियोगिता में अभिमन्यु सांगवान ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

बाइक सवार युवकों पर गाड़ी चढाने का आरोप

बहल। भोजन मार्ग पर बाइक सवार दो युवकों पर पिकअप चढ़ाने व लाठी-डंडों से हमला का आरोप है। जिसमें दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने 8 नामजद कर 5-6 अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया है। वार्ड 9 वासी पीड़ित विक्रम 5 अगस्त की शाम महेश अपनी बाइक पर खेत से लौट रहे थे। निर्णाधीन पशु अस्पताल के पास पिकअप ने बाइक को टक्कर मारी व हमला कर दिया।

तिरंगा देश की आन, बान व शान का प्रतीक

भिवानी। तिरंगा देश की आन, बान और शान है, हमें इसके सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, यह हमारे देश की आजादी का प्रतीक है, जिसे हमारे देश के शहीदों ने अपने खून से खींचा था, हमें उनकी कुर्बानी को सदैव याद रखना चाहिए। यह बात वैश्य कॉलेज एनएसएस, एनसीसी व सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के संयुक्त कार्यक्रम में कॉलेज प्राचार्य डॉ. सजय गोयल ने कही।

केएन स्कूल में कल चुनी जाएंगी सांस्कृतिक टीमें

चरखी दादरी। स्वतंत्रता दिवस के लिए एसडीएम योगेश सैनी की अध्यक्षता में सांस्कृतिक टीमों का चयन सोमवार 11 अगस्त को किया जाएगा। इसके लिए सुबह 9 बजे के एन स्कूल में जिला का कोई भी शिक्षण संस्थान आ सकता है। कमेटी के सदस्य सचिव एवं डीआईपीआरओ संदीप हुड्डा ने बताया कि 79वें स्वतंत्रता दिवस पर नई अनाज मंडी में जिला स्तरीय कार्यक्रम होगा।

महिला जन सुनवाई कार्यक्रम कल

चरखी दादरी। राष्ट्रीय महिला आयोग सोमवार 11 अगस्त को भिवानी में महिला जनसुनवाई करेगा। महिला आयोग आपके द्वार थीम पर आयोजित कार्यक्रम में चेयरपर्सन विजया महिलाओं की शिकायतों की सुनवाई करेंगी व आवश्यक निर्देश भी देंगी। इसके लिए दादरी,भिवानी में रोहतक के अधिकारियों को भी बुलाया, ताकि महिलाओं की शिकायते मौके पर निपटाई जा सके।

सद्भावना त्रिवेणी अभियान में रोपित किए 101 पौधे

भिवानी। सद्भावना त्रिवेणी रोपण अभियान चला शनिवार को रक्षाबंधन पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए गांव झूप्पाकलां में बाबा श्याम बगीची और पोकरवास के मुक्तिधाम में पौधरोपण किया। हवलदार लोकरण नेहरा ने बाबा श्याम बगीची में 101 पौधे रोपे, जिनमें विभिन्न प्रकार के औषधीय और छायादार पौधे लगाए।

15 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान कार्यक्रम

तोशाम। एसडीएम रवि मीणा ने कहा कि 'आजादी का अमृत काल' के तहत आगामी 15 अगस्त 2025 तक पूरे हरियाणा राज्य, जिला सहित तोशाम उपमंडल में हर घर तिरंगा अभियान हर्षोल्लास और गर्व के साथ मनाया जाएगा। इसका उद्देश्य जन-जन में देशभक्ति की भावना का संचार करना है।

स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियाँ जोरों पर

तोशाम। स्वतंत्रता दिवस समारोह 2025 की तैयारियां जोरों पर है। एसडीएम रवि मीणा (आईएएस) ने कहा कि कार्यक्रम राष्ट्रीय पर्व की गरिमा के अनुरूप होने चाहिए और उनमें भारतीय संस्कृति,शौर्य,परंपरा और तकनीकी प्रगति का समावेश स्पष्ट रूप से दिखना चाहिए।

हेमंत गोल्डी बने युवा सुनार जनसेवा समिति के प्रधान

भिवानी। पतराम गेट स्थित अजमीढ़ भवन में युवा सुनार जन सेवा समिति का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ। समारोह में समिति के नवनियुक्त पदाधिकारियों ने संस्था के संविधान के अनुसार अपने-अपने पदों की विधिवत शपथ ली। । नई कार्यकारिणी का गठन किया, जिसमें हेमंत वर्मा उर्फ गोल्डी को प्रधान, परविंदर छपारिया को महासचिव और कुलदीप सोनी एडवोकेट को कोषाध्यक्ष चुना गया। इनके अलावा योगेंद्र सोनी एडवोकेट को कानूनी सलाहकार, अमित सोनी को ऑडिटर, रामकुमार भट्ट व वरुण वर्मा को उपप्रधान चुना। संजय सोनी सहसचिव और समीर सोनी मीडिया प्रभारी बनाए। पंकज सोनी और अर्जुन सोनी को कार्यकारिणी सदस्य बनाए।

तोशाम तहसील के सागवान गांव की 2500 एकड़ जमीन जलमग्न

घग्गर ड्रेन टूटने से हालात हुए बेकाबू गांवों में घुसा पानी, पलायन को मजबूर

गांव के शमशान घाट, पंचायत घर, आंगनवाड़ी केन्द्र, अखाड़ा, जलघर और स्कूल में भरा पानी

हरिभूमि न्यूज ⏭तोशाम/ भिवानी

तोशाम तहसील के सागवान गांव में भिवानी घग्घर ड्रेन दांग गांव की ओर से टूटने के कारण गांव के हालात बहुत ज्यादा खराब हो गए हैं। जलभराव से गांव में बाढ़ से हालत बने हुए हैं। घग्घर ड्रेन ओवरफ्लो होकर पानी गांव में घुस गया है, जिससे गांव के शमशान घाट, पंचायत घर, आंगनवाड़ी केन्द्र, अखाड़ा के पास और सरकारी स्कूल, जलघर सहित घरों में तीन से चार फुट पानी भर गया। अब पीछे से दरिया की तरह बहाव वाले पानी को पाइप मोटरों से उठाकर तोशाम की तरफ छोड़ा जा रहा है। तेज बहाव से बहुत से घरों में पानी घुस गया है। गांव वालों द्वारा कुछ घरों के पास चारों तरफ बांध लगाकर कुछ हद तक पानी को रोकने का प्रयास किया जा रहा हैं। पीछे से भिवानी घग्घर का पानी अभी भी गांव की तरफ आ रहा है, जो पूरी तरह से बंद नहीं हुआ है।

भिवानी। गांव सागवान के शमशान घाट परिसर में जमा बरसाती पानी।

भिवानी। गांव सागवान में घरों व भवनों में घुसा बरसाती पानी। फोटो: हरिभूमि

मंत्री ने दिए पानी निकासी के आदेश, प्रक्रिया धीमी

उन्होंने कहा कि गांव सागवान की 2500 एकड़ जमीन जलमग्न हो गई है। खरीफ फसल पूरी तरह तबाह हो गई, रबी फसल भी नहीं होगी। गांव के सरपंच प्रतिनिधि बलजीत सिंह व पूर्व सरपंच प्रतिनिधि राजपाल सिंह ने कहा कि बापोड़ा बलियाली रोड पर नजदीक निगाणा फीडर ड्रेन पर पानी उठाने के लिए दो बड़ी मोटरें 100 हार्स पावर वाली मोटरें लगाकर निगाणा फीडर की मोटरों को पानी पहुंचाया जाए, तब जाकर सागवान दांग की तरफ पानी रुक सकता है। वहीं राज्य की सिंचाई मन्त्री श्रुति चौधरी ने भी कल गांव का दौरा कर सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र पानी निकासी के आदेश दिए, लेकिन अभी भी पानी निकासी की प्रक्रिया धीमी है।

दांगकंला व सागवान की पंचायतें आपसी रजाबंदी से पानी रोकने की कोशिश कर रही हैं। किसान सभा की जिले की पांच सदस्यी टीम जिला प्रधान रामफल देशवाल, उपप्रधान कामरेड ओमप्रकाश, कर्णसिंह जैनावास, रणधीर सांगवान व राजेश मिरान ने गांव का दौरा किया तथा किसानों से मुलाकात की। उन्होंने जिला प्रशासन व सरकार से शीघ्र जलभराव की निकासी करवाने, क्षतिपूर्ति पोर्टल खुलवाने, विशेष गिरदावरी करवाने व किसानों को एक लाख रुपये प्रति एकड़ मुआवजा दिए जाने की मांग की है। इसके साथ गांव को पीने का पानी, पशुओं के लिए चारा, किसानों के बैंक ऋण भुगतान स्थगित करने, ब्याजमाफी, जलभराव से मकानों को हुए नुकसान का मुआवजा देने की मांग की।

भिवानी। गांव सागवान में घरों में घुसे बरसाती पानी को दिखाते कामरेड ओमप्रकाश व ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

बवानीखेड़ा। पानी की निकासी की मांग को लेकर नारेबाजी करते हुए।

निकासी न होने से परेशान लोगों का घरों से पलायन

- जल्द सरकार ने पुख्ता प्रबंध न किए तो आंदोलन के लिए मजबूर

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा कस्बे के वार्ड सख्या सात व स्लम बस्तियों में जमा बारिश के पानी की निकासी न होने से परेशान घरों के परिवारों सहित घरों से पलायन कर दूसरी जगह रहने के लिए मजबुर हो गये है। शासन व प्रशासन ने उनकी कोई सुद ना ली है जिस कारण कस्बा के लोगों ने रोष व्यक्त पानी की निकासी के उचित प्रबंध करवाकर जल्द ही बारिश के पानी की निकासी करवाए जाने की भी मांग की है अन्यथा पानी खड़ा रहा तो भयावह परिणाम हो सकते हैं। कस्बावासी एडवोकेट राजेश सिंधू व धर्मपाल गौरी ने बताया कि कस्बा मे बारिश के पानी की सही ढंग से निकासी न होने तथा कस्बा के छः व सात वार्ड के घरों व वार्ड की स्लम बस्ती में पानी जमा होने की वजह से चहुंओर हाहाकार मचा है, दर्जनों घरों में बरसात का पानी तीन फुट से ज्यादा भर गया मजबुर लोग घरो से पलायन करना पड़ रहा है। रोजी रोटी के लाले पड़े है, तमाम काम धंधे चोपट हो गये है , पशु के लिए चारा तथा उनके लिए व्यवस्था का कोई स्रोत ना बचा है।

नहीं मिली कोई मदद

कुछ ही दूरी पर विधायक का घर है लेकिन आज तक कोई मदद नहीं की। मोनू रामभगत, वीरभान, सत्यवान ,अजय ,मनजीत, पंकज, मन्दीप ,सोनू ,साहिल, रवि ,सोनू ,कालिया ,विजय, राजेंद्र, रोहताश ने बताया नपा व प्रशासन ने तुरंत पानी निकासी की व्यवस्था नहीं की तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे। प्राइमरी स्कूल व स्लम बस्ती तथा हांसी भिवानी के पुराना मुख्य मार्ग में पानी जमा है। कस्बा के चारों ओर बुरा हाल है , पानी की निकासी नही हो पा रही है, लोगो को आने जाने तथा जीवन यापन में भारी तकलीफ हो रही है। काफी कस्बा के गरीब लोगों के घरों में पानी भरने से लोग घर छोड़कर बाहर किराए के मकानों में रहने को विवश हैं।

शिविर में जांचा शिक्षकों का व्यवहार

- राकवमावि लोहड़ में प्रभावी कक्षा अवलोकन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

चिड़ियाघर रोड़ पर स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लोहाड़ में प्रभावी कक्षा अवलोकन शिविर का समापन हुआ। वीरेंद्र नाराजी, उप निदेशक, एससीईआरटी के मार्गदर्शन में, जिला शिक्षा अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी, डाइट प्राचार्य के नेतृत्व में, भिवानी जिले में 04 अगस्त 2025 से 08 अगस्त 2025 तक मिश्रित मोड में प्रभावी कक्षा अवलोकन पर एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जिसमें जिले के समस्त एबीआरसी और बीआरपी ने भाग लिया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन, डाइट भिवानी में नवरत्न पांडेय, आईएफएससी विंग प्रभारी के उल्लेखनीय सहयोग से, प्रवक्ता मोनिका, नीरज सुपर्णा, ओम प्रकाश पंवार, पूजा मंडल, प्रवीण, रीचा, सोनिया, पूनम, हेमलता, नीलम, सुभाष चन्द्र, पूनमदेवी, संतोष मोनिका ने अपनी अपनी अहम भूमिका अदा की। जिसका उद्देश्य मेंटर्स को शिक्षकों के व्यवहार का अवलोकन करने और कक्षा में रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने के कौशल से लैस करना था। इससे छात्रों के लिए सीखने का माहौल बेहतर हो सके। प्रशिक्षण का समापन प्रतिभागियों साझा किए।

बवानीखेड़ा। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लोहाड़ में प्रभावी कक्षा अवलोकन शिविर का समापन में कर्मचारी व अधिकारीगण। फोटो: हरिभूमि

बाइक फिसलने से राखी बांधने आई वृद्धा की मौत

बवानी खेड़ा। गांव सुई में अपने भाइयों को राखी बांधने आ रही एक 50 वर्षीय महिला की बाइक फिसलने के चलते गंभीर चोट लगने के कारण मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मृतका बेटे के बयान पर कार्रवाई कर शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। सोंप गांव निवासी मोहन ने बताया कि वह अपनी 50 वर्षीय माता राजपति को बाइक पर लेकर अपने मामा के घर सुई गांव आ रहे थे । सूई गांव में पहुंचे तब अचानक बाइक का टायर फिसल गया। जिसमें उसकी माता निचे गिर गई तथा उसे गंभीर चोटें आई। मोहन ने बताया कि राजपति की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही सुई गांव में मृतक महिला के परिवार में खुशी का माहौल मातम में बदल गया।

5 गांवों में बनेंगे उपस्वास्थ्य केंद्र भवन

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

- दो उप स्वास्थ्य केंद्रों का निर्माण कार्य शुरू

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि हरियाणा सरकार का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ, समग्र और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा 24 जुलाई को दादरी जिले में पांच नए उप-स्वास्थ्य केंद्र भवनों का शिलान्यास किया। इन भवनों का निर्माण तीन करोड़ 14 लाख रुपये की लागत से किया जाएगा। दादरी जिले के भांडवा, चिड़िया, खेड़ी बुरा, कलियाना और चंदेनी गांवों में बनाएं जाएंगे। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि स्वस्थ गांव, सशक्त समाज अभियान के तहत शुरू की गई यह महत्वाकांक्षी परियोजना ग्रामीणों को अपने ही क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाएगी। इन उपस्वास्थ्य केंद्रों में नियमित टीकाकरण, गर्भवती महिलाओं की देखभाल, निःशुल्क जांच व दवाइयों की सुविधा, आकस्मिक प्राथमिक उपचार और रेफरल सेवाएं जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इससे समय रहते बीमारियों की पहचान करने से उनकी रोकथाम में मदद मिलेगी।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव।

नैतिक जिम्मेदारी

आरती सिंह राव ने कहा कि गांवों में स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाना हमारी नैतिक और प्रशासनिक जिम्मेदारी है। इन केंद्रों से हजारों ग्रामीणों को लाभ मिलेगा। यह पहल केवल स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि एक स्वस्थ, आत्मनिर्भर और जागरूक समाज के निर्माण की दिशा में ठोस कदम है।

दो पर काम शुरू

मंत्री आरती राव बताया कि कलियाना और चंदेनी गांवों में पुराने भवनों की जगह नए भवनों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। शेष तीन भवनों का कार्य भी शीघ्र शुरू किया जाएगा, ताकि ग्रामीणों को जल्द से जल्द इन सुविधाओं का लाभ मिल सके।

छात्राओं ने प्रतियोगिताओं में दिखाई अपनी प्रतिभा

- राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में हुई ललित कला प्रतियोगिताएं

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

राजीव गांधी महिला कॉलेज में प्राचार्य त्रिलोकचंद की अध्यक्षता में ललित कला विभाग के तत्वावधान में संयोजक प्रोफेसर सतविंद्र चौहान व प्रोफेसर ललिता कुमारी के कुशल प्रबंधन में 'हर घर तिरंगा','आपरेशन सिंदूर' विषय पर रंगोली, व ' वॉल डेकोरेशन', सैल्फी प्वाइंट, राखी मेंकिंग आदि प्रतियोगिताएं करवाई, जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छात्राओं ने अत्यंत आकर्षक व स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत प्रस्तुतियां दी। प्राचार्य ने छात्राओं व ललित कला विभाग को बधाई देते हुए कहा कि राष्ट्रप्रेम पूर्ण पवित्र पूजनीय भाव होता है, स्वतंत्रता सेनानियों के इसी त्याग देशप्रेम व संघर्ष के कारण हमें विकसित स्वतंत्र राष्ट्र का नागरिक होने का सौभाग्य मिला है और ध्वज हमेशा हमें शाश्वत पहचान देता है। प्रधानमंत्री ने 'हर घर तिरंगा' के माध्यम से उन्नत राष्ट्र भाव व गौरव से भरी पहचान को हर घर, हर जन तक पहुंचाने का पावन कार्य किया है।

भिवानी। छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली देखत अतिथि। फोटो: हरिभूमि

किसानों का धरना रहा जारी

- किसान संगठन की बीमा देने व घोटाले की जांच की मांग।

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढ़ड़ा

कपास बीमा क्लेम में घोटाले की जांच व क्लेम प्राप्ति तक संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर बाढ़ड़ा आनजमंडी में धरना जारी रहा। अध्यक्षता प्राचार्य हवासिंह किसान सभा दादरी के प्रधान रणधीर कूंगड़, भारतीय किसान यूनियन भूपसिंह, एमएसपी किसान मोर्चा के ब्रह्माप्रकाश, सीटू के कामरेड सुमेर ने की। संचालन किसान सभा बाढ़ड़ा के सचिव रामपाल धारणी ने की। उन्होंने कहा कि संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर पूरे देश में 13 अगस्त को जिलों और तहसील हेड क्वार्टर पर प्रदर्शन किए जाएंगे, जिसकी तैयारी के लिए ब्लॉक के दर्जनों गांव हडौदा, हडौदी, मांढ़ी केहर, मांढ़ी हरिया, मांढ़ी पिरानु, हुई, जगरामबास व डालावास आदि गांवों में अभियान चलाया। किसान नेताओं ने कहा कि खरीफ और 2023 कपास बीमा क्लेम में कृषि विभाग के अधिकारियों ने मिलकर चुनाव आचार संहिता के चलते जिला भिवानी व चरखी-दादरी जिलों के 450 करोड़ रुपयों के क्लेम को लगभग सौ करोड़ रुपये कर 250 करोड़ रुपयों का घोटाला किया। इतना ही नहीं हरियाणा भर में वर्ष 2022-23 में जहां फसल बीमा क्लेम 2497 करोड़ रुपये मिला। चुनावी वर्ष 2023-24 में यह क्लेम सिर्फ 224 करोड़ रुपये किसानों को दिया गया है। धरने पर मास्टर रघुवीर, ओमप्रकाश खोरडा, करतार, महीपाल कारीदास, श्योराण खाप प्रधान बिजेंद्र सिंह बेरला, प्रताप सिंह मौजूद रहे।

बाढ़ड़ा। कस्बे की अनाज मंडी में धरने पर नारेबाजी करते किसान। फोटो: हरिभूमि

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस मिलकपुर में 'आजादी के परवाने' पर्व और रक्षाबंधन पर कार्यक्रम

बवानीखेड़ा। मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में "आजादी के परवाने" पर्व, रक्षाबंधन उत्सव तथा विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य नितीश मिश्र के प्रेरणादायक संबोधन से हुआ। उन्होंने रक्षाबंधन के महत्व को बताते हुए कहा कि यह त्यौहार भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और सुरक्षा के वचन का प्रतीक है। साथ ही, उन्होंने श्रावण मास अर्थात पढ़ने व पढ़ाने तथा सुनने और सुनाने के महीने को 'सावन मास' की संज्ञा देते हुए इसके धार्मिक और सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर राखी बनाने, हिंदी और अंग्रेजी निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने अपनी सृजनात्मकता और कलात्मक प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया। रंग-बिरंगी राखियां और भावपूर्ण निबंध देखकर सभी उपस्थित लोग प्रभावित हुए। समारोह के अंत में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के गीत, कविताएं और देशभक्ति कार्यक्रम ने वातावरण को प्रेम, भाईचारे और देशभक्ति की भावना से सराबोर कर दिया। सभी छात्रों की सक्रिय भागीदारी ने इस आयोजन को यादगार बना दिया। व इस अवसर पर स्कूल निदेशक साहिल यादव एवं उप प्रधानाचार्या गीता यादव, प्राथमिक प्रभारी प्रोमिला यादव आदि मौजूद रहे।

बवानीखेड़ा में खाद के लिए मारामारी से किसान परेशान

घर-बार को छोड़ लाइन में लग रही महिलाएं

- आधे से अधिक खरीफ सीजन बीता, नहीं खत्म हो रही समस्याएं

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

लगता है कि यूरिया व डीएपी खाद की कमी किसानों के साथ साए की तरह चिपक गई है। खरीफ फसल का आधे से ज्यादा सीजन बीतने के बावजूद भी किसानों को खाद नहीं मिल पा रही है। अब भी किसान खाद के लिए मारे मारे फिर रहे है। ऐसा ही नजारा शनिवार को बवानीखेड़ा में एक खाद की एजेंसी के सामने को देखने को मिला। रक्षा बंधन का पर्व होने के बाद भी पूरे दिन महिला व पुरुष यूरिया व डीएपी खाद के लिए पैक्स सोसायटी के आगे लाइनों में लगे रहे। हालांकि घंटों इंतजार करने के बाद कुछ किसान तो खाद लेने में कामयाब हो गए,लेकिन आधे से ज्यादा किसानों को यूरिया खाद नहीं मिल पाई है।जिस वजह से अब भी इस बार खरीफ फसलों की औसतन पैदावार घटना लाजिमी है।

बवानीखेड़ा। खाद के लिए लाइनो में लगी महिला किसान। फोटो: हरिभूमि

यूरिया और डीएपी आने की मिली थी सूचना

शनिवार को जैसे ही किसानों को यूरिया व डीएपी खाद आने की सूचना मिली तो किसान पैक्स सोसायटी के कार्यालय पर पहुंचने शुरू हो गए। कुछ ही देर में अनेक किसान पहुंच गए। जिनमें महिलाओं के साथ साथ किसान पुरुषों की भी संख्या अच्छी खासी थी। हैरानी की बात यह है कि महिला किसान रक्षा बंधन का पर्व छोड़कर खाद के लिए लाइनों में खड़ी हुई। शुरू में तो खाद के लिए ज्यादा किसान नहीं थे,लेकिन जिस हिसाब से किसानों को खाद आने का पता चलता गया तो वहां पर भीड़ बढ़नी शुरू हो गई। जिस वजह से महिला किसानों की अलग तो पुरुष किसानों की अलग से लाइनें बनवानी शुरू कर दी। पूरे दिन इसी तरह की स्थिति बनी रही। कुछ किसान तो खाद लेने में कामयाब हुए तो अनेक किसानों को खाद नहीं मिल पाई। जिसके चलते किसानों को मायूसी ही हाथ लगी। इनेलो नेता सुनील लांबा ने भी किसानों का दर्द जाना और सरकार को आडे हाथों लेते हुए बताया कि न तो सरकार किसानों के खेतों से बरसाती पानी निकाल पाई है।

पिकअप ने महिला को मारी टक्कर, मौत

तोशाम। तोशाम-भिवानी मार्ग पर पेट्रोल पंप के नजदीक एक पिकअप गाड़ी चालक एक महिला को टक्कर मारकर मौके से फरार हो गया। हादसे में महिला की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। गांव रिवासा निवासी कृष्ण ने बताया कि गांव चैनत निवासी उसकी चाची बाला पहले उसके पास गांव रिवासा में रहती थी। दो हाम से वह हांसी के प्रेम नगर स्थित अपने घर में रह रही थी। शनिवार सुबह रिवासा आने के लिए तोशाम-भिवानी मार्ग पर गोयल पेट्रोल पंप के नजदीक वाहन का इंतजार कर रही थी। इसी दौरान एक पिकअप चालक उसकी चाची बाला देवी को सीधी टक्कर मार दी और आरोपी गाड़ी चालक घटना के पश्चात मौके से फरार हो गया।

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्वाधीनता दिवस विशेष

रोहतक, रविवार
10 अगस्त 2025

P-1

आवरण कथा
ओम निश्चल

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

79वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी की फलश्रुति

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है- *यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है- *तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।*

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हमः यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्यः इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिकाः हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर

हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

दो शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श परः हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्षः जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगेः साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रमः 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियांः हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी

स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनियाः हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैलीः हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्वः मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाबः नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

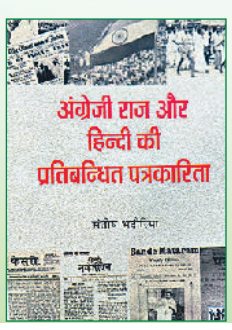

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताबः अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखकः** संतोष भदौरिया, **मूल्यः** 350 रुपए, **प्रकाशकः** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेषः जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाइयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

नया दौर

लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरणः हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैंः आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावरः एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपीलः श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

कहानी

आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

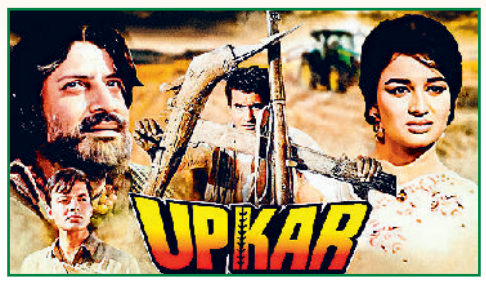

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *